पुणा International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Class 7 : sample note book

कविता 1 हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविः शिवमंगल सिंह 'सुमन'

प्रसंगः प्रस्तुत कविता हमारी पाठपुस्तक वसंत भाग 2 से ली गई है जो शिव मंगल सिंह सुमन द्वारा रचित है।

व्याख्याः हम पंछी उन्ममक्त गगन के कविता में कवि ने आजादी की महत्ता को प्रस्तुत किया गया है। कवि ने गलामी की अपेक्षा आज़ादी को श्रेष्ठ मानमे हुए पक्षियों की वाणी के माध्यम से इसे अपने भावों का आधार बनाया है।खुले आसमान में उड़त हुए आजाद पक्षी ही चहचहाते हैं। यदि उन्हें पिंजरे में बंद कर दिया जाए तो वे बंदी अवस्था में नहीं गाते। सोने के पिंजरे में भी यदि उन्हें बंद किया जाए तो भी वे मुक्त होने के लिए उसकी तीलियों से टकरा-टकरा कर अपने पंख तोड़ लेते हैं। उन्हें तो बहता जल और नीम का फल अच्छा लगता है पिंजरे में रहकर उनके लिए खुला आसमान बहता पानी,पेड़ की डाल सब कुछ सपना हो जाता है। उन्हें किसी सेर कुछ नहीं चाहिए ।यदि भगवान ने उन्हें बाँधकर नहीं रखना चाहिए। उन्हे विचरण करने के लिए खुले आसमान में छोड़ देना चाहिए।

विशेष :भाषा सरल और सहज है।

शब्दार्थ

1 पंछी - पक्षी

2 उन्मुक्त - खुले

3 कनक - सोना

4 कटुक - कड़वा

5 निबैरी - नीम का फल

6 तरू - पेड़

7 फुनगी - पेड़ का सबसे ऊपरी भाग

8 अरमान -इच्छाएँ

9 क्षितिज - जहाँ धरती और आकाश मिलते हुए नज़र आते हो

10 होड़ा- होड़ी- मुकाबला

11 नीड़ -घोसला

12 आश्रय -सहारा

13 छिन्न-भिन्न - तहस नहस करना

14 विघ्न - बाधा

15 पंख - पर

16 तारक- तारे

17 सीमाहीन-जिसकी कोई सीमा ना हो

18 स्वर्ण श्रृंखला- सोने का बना बर्तन

19 बंधन - गुलामी

20 पलकित -खुशी से फड़फड़ाते

साहित्यक -विभाग

अतिलघु उत्तर

1 कनक-कटोरी का मैदा किसका प्रतीक है?

उत्तरः पराधीन जीवन का

2 कवि और कविता का नाम लिखिए।

PUNA

उत्तरः कवि का नाम- शिवमंगल सिंह 'सुमन'

कविता का नाम- हम पंछी उनमुक्त गगन के

3 पक्षियोंके क्या अरमान क्या थे?

उत्तरः खुले आकाश में दूर-दूर तक उड़ना।

4 पक्षियोंके पिंजरे मेंकैसी तीलियाँ लगी हैं?

उत्तरः सोने की

लघु उत्तर

1 पक्षी उन्मुक्त गगन में उड़ने के लिए क्या-क्या त्यागने को तैयार है?

उत्तरः पक्षियों को स्वतंत्रता अत्याधिक प्रिय है। वे स्वतंत्रता को बनाए रखने के लिए अपना घोंसला,पेडों की डालियों का सहारा तथा पिंजरे में कनक कटोरी में रखा मैदा तथा मनुष्य द्वारा दी जाने वाली सुविधाएँ त्यागने को तैयार हैं।

2 पिंजरे मेंबंद पक्षी खुश क्यों नहींहै?

उत्तरःपिंजरे में बंद पक्षियोंकी आज़ादी छिन चुकी है। पिंजरे मेंवे अपनी इच्छानुसार घूम-फिर नहीं सकते हैं न अपने पंख को खोल सकते हैं वे नदी-झरनों का बहता जल पीने और जंगल के फल खाने को तरस गए है।

3 पक्षी हम मनुष्योंसे क्या प्रार्थना करते हैं?

उत्तरः पक्षी हम मनुष्यों से यह प्राथंना करते हैं कि हम मनुष्य उसके घोंसलों और आश्रय को भले ही नष्ट कर दें पर इेसा कोई कार्य न करें जिससे उनकी उन्मुक्त उडा़न में कोई बाधा आए और उनकी स्वतंत्रता का हनन न हो।

दीर्घ उत्तरः

1 हम पंछी उनमुक्त गगन के कविता से पक्षियों की किन स्वाभाविक विशेषताओं का पता चलता है?

उत्तरः पक्षियों के अनेक स्वभाव के बारे में पता चलता है जैसे कि उनको आज़ादी बहुत प्रिय है। इसफले पाने के लिए वे पिंजरे से बाहर आने का निरंतर प्रयास करते रहते हैं, भले ही पिंजरे से टकराकर उनके पंख टूट जाएँ।

पक्षी बहता जल पीने वाले और स्वतंत्र रहकर कड़वे फल खाकर भी खुश रहने वाले होते हें।

2 हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविता किन मानवीय मूल्यों को उभारने में सहायक है?

उत्तर :1 अपनी स्वतंत्रता बनाए रखने का प्रयास करना चाहिए।

2 पशु-पक्षियों की स्वतंत्रता का हनन नहीं करना चाहिए।

3 पेड़-पौधे और अपने पर्यावरण की रक्षा करनी चाहिए।

4 जीव-जंतु के प्रति दयावान बनना चाहिए।

व्याकरण

प्रः1 भाषा किसे कहते है?

उः भाषा वह साधन है जिसके माध्यम से मनुष्य अपने मन के भावों एवं विचारोंका आदान -प्रदान करता है।

प्रः2भाषा के कितने रूप है? कौन-कौन से?

उः भाषा के दो रूप है

मौखिक ,लिखित

प्रः3बोली किसे कहते है?

उः किसी प्रांत के सबसे छोटे-से क्षेत्र में बोली जाती है। इसमें साहित्यक रचनाएँ नहीं होतीं।

प्रः4 लिपि किसे कहते है?

उः भाषा की मौखिक ध्वनियों का जिन चिहनों के दवारा लिखा जाता है, उन्हें लिपि कहते है।

प्रः5 व्याकरण किसे कहते है?

उः वह शास्त्र, जिससे भाषा के शुदध रूप और प्रयोग का ज्ञान होता है, उसे व्याकरण कहते है।

लेखन - बोध

ग्रीष्म ऋतु (गरमी की ऋतु) पर निबन्ध |

मौसम कभी भी एक जैसा नहीं रहता है | यह परिवर्तित होता रहता है | मौसम के साथ-साथ ऋतुएँ भी बदलती हैं | शीत ऋतु के बाद बसंत की सुहानी ऋतु आती है |

बसंत ऋतु के बाद प्रचंड गरमी की ऋतु ग्रीष्म ऋतु आती है | हालाँकि कुछ हद तक यह कष्टदायक ऋतु है परंतु इस ऋतु का भी अपना एक आनंद, एक अलग सौंदर्य है | ग्रीष्म ऋतु अप्रैल माह से आरंभ होकर जून-जुलाई तक चलती है | इस ऋतु में पर्णपाती वृक्षों की पत्तियाँ गिर जाती हैं |

इसलिए इसे पतझड़ ऋतु भी कहते हैं | गरमी इतनी पड़ती है कि दोपहर में घर से निकलना कठिन हो जाता है | जैसे-जैसे दिन अत्मे बढ़ता है प्रखर सूर्य रश्मियों क्य प्रकोप बढ़ता जाता है | दोपहर के तीन-चार घंटे बड़े कष्टदायक प्रतीत होते हैं | लोग घर से बाहर सिर पर टोपी, पगड़ी डालकर या छाता लेकर निकलते हैं |

ठंडे पेय पदार्थ, लस्सी, शरबत आदि अत्यंत प्रिय लगते हैं | इस ऋतु में आम, लीची, खीरा, ककड़ी आदि फल-सब्जियाँ तृप्तिदायक होती हैं | ग्रीष्म ऋतु को गरीबों की ऋतु कहा जाता है क्योंकि इस ऋतु में बहुत कम वस्त्रों से भी काम चल जाता है |

इस ऋतु में सूती वस्त्र बहुत उपयोगी होते हैं जो हमें लू के थपेड़ों से बचाते हैं | कभी-कभी आँधी तूफान भी आते हैं और धूल-भरी हवाएँ आसमान में छा जाती हैं |

आसमान लोहित हो जाता है । पर जब वायु जरा भी हिलती-दुलती नहीं तो उमस बढ़ जाती है ।

ग्रीष्म ऋतु में जल का महत्त्व बढ़ जाता है । प्यासे लोग, प्यासी भूमि, प्यासे पशु-पक्षी और झुलसे हुए पेड़-पौधे सभी जल की माँग करते हैं । धन्य है वह किसान जो इस ऋतु में भी फसलों की सिंचाई करता है । वे स्त्रियाँ भी धन्य हैं जो मटके लेकर मीलों जल भरने जाती हैं । सरोवर ताल-तलैया, कुएँ, बावड़ियों, झील, नदियाँ सभी इस ऋतु में सूखने लगती हैं ।

स्वाध्याय: पक्षियों पर आधारित एक कविता लिखिए।

गतिविधि: पक्षियों का चित्र चिपकाकर उन पर सात वाक्य लिखिए।

पाठ 2 दादी माँ **लेखक :शिवप्रसाद सिंह**

शब्दार्थ

1 कठिनाई -मुशिकल

2 शुभचिंतक - भला चाहने वाले

3 चैत- अप्रैल

4 विचित्र- अजीब

5 लवंग- लौंग

6 अनुमान- अंदाजा

7 विलंब- देरी

8 हाथापाई- झगड़ा,लड़ाई, हाथ चलाना

9 वंश- कुल

10 चारपाई- खाट

11 संदूक - लोहे की पेटी

12 शीत- ठंडी

13 अभयदान -शरण देना

14 धोती- साड़ी

15 ज्वर- बुखार

16 अनमना -उदास

17 प्रतिकूलता- विपरीत स्थिति

18 दालचीनी -एक मसाला

19 वात्याचक्र - घटनाक्रम

20 निस्तार -उद्धार

साहित्य-विभाग

अतिलघु उत्तरः

1 लेखक अपनी कमजोरी किसे मानता है?

उत्तरः लेखक बीस वर्ष का था,फिर भी जरा-सी मुश्किल आने पर वह घबरा जाता था।

2 लेखक भीतर-ही भीतर हुड़क रहा था, क्यों?

उत्तरः लेखक को अनय बच्चों की तरह तालाब के झाग भरे पानी में नहाना पसंद था,पर ज्वर के कारण वह नहा न सका।

3 लेखक की उम्र कितनी लगती है?

उत्तरः बीस साल से अधिक

4 दादी जी के आँचल की गाँठ में क्या बँधा था?

उत्तरः मिटटी

लघु उत्तरः

1 दादी मैं ने अपने परिवार की आर्थिक स्थिाति खराब होने पर किस तरह मदद की?

उत्तरः लेखक के परिवार की आर्थिक स्थिति इतनी खराब हो चुकी थी कि कोई भी

उधार देने को तैयार न था ऐसे में दादी माँ न अपने पति और कुल की निशानी कंगन निकालकर दे दिए, ताकि उसे बेचकर घर का खर्च चलाया जा सके।इस प्रकार उन्होंने खराब आर्थिक स्थिति में परिवार की मदद की।

2 दादी माँ बीमारियोंका अनुमान और इलाज कैसे कर लेती थीं?

उत्तरः दादी माँ अत्यंत अनुभवी महिला थीँ । वह हाथ,पेट और माथा छूकर बुखार,मलेरिया,सरसाम और निमोनिया जैसीबीमारियों का अनुमान लगा लेती थीं।वह इन बीमारियों का इलाज लौंग गुड मिश्रित जल, गुगल और धूप से करती थीं।

३ लेखक के मित्रोंका स्वभाव आपकी दृष्टि मेंकैसा था?

उत्तरः लेखक को जरा-सी बात पर परेशान होता दख उसके मित्र उसे खुश करने का प्रयास करते और आने वाली छुटिटयों की सूचना देते,पर पीठ पीछे प्रतिकूलता

से घबराने वाला कहकर उसका मजाक उड़ाते थे। इस तरह का व्यवहार उचित नहीं है।

दीर्घ उत्तर

1 क्वार के महीने मेंवातावरण में आए बदलावोंका वर्णन पाठ के आधार पर कीजिए-

उत्तरः दादी माँ पाठ से ज्ञात होता है कि क्वार के महीने में तालाब में लबालब पानी भरा होता है। इस पानी में दूर-दराज के क्षेत्रों से बहकर आई जंगली घासें , मोथा,थेऊर और बनप्याज की जड़ें, अधगली घासे, बरसाती घासों के बीज आदि सूरज की गर्मी से सड़कर वातावरण में विचित्र गंध पैदा करती हैं।तालाब के इस झाग भरे पानी में बच्चों को प्रसन्नता से कूदते और नहाते देखा जा सकता है।

2 ' दादी माँ' पाठ के आधार पर दादी का चरित्र चित्रण कीजिए-

उत्तरः 1 **ममतामयी महिलाः** दादी अत्यंत ममतामयी थीं।वह पने परिवार के अलावा दूसरों पर भी महत्व बनाए रखती थीं।

2 **धार्मिक महिलाः** दादी आस्तिक थीं। दुख की घड़ी में आँखे बंद कर पूजा-अर्चना एवं चिंतन करती थीं।

3 **परोपकारिणीः** दादी दूसरों की मदद करने में सदैव आगे रहती थीं। उन्होंने रामी की चाची का कर्ज माफकर उसकी बेटी की शादी के लिए रुपये भी दिए।

4 **गहन सेवा भावनाः** दादी के मन में सेवा-भावप्रगाढ था।वह दूसरोंकीबीमारी मेंउनकी सेवा के लिए उनके घर पहुँच जाया करतीथीं।

3 दादी माँ के लिए कंगन इतने महत्वपूर्ण क्यों थे?

उत्तरः दादी माँ के लिए उनका परिवार बहुत महत्व रखता था। परिस्थितियों वात्याचक के कारण उनका परिवार आर्थिक संकट में पडता गया,फिर भीउन्होंने इन संकटों का मुकाबला किया और अपने कंगनों को संभाले रखा। इन कंगनों के साथ दादी की आस्था एवं भावना जुड़ी थी।यह कंगन दादा जी वंश की निशानी थे, जिन्हें दादी ने पहनने के बजाय सँभाल कर रखा था। यह कंगन उन्हें दादा जी

ने दिए थे, जो अब इस दुनिया में नहीं रहे। ऐसे में दादी के लिए वे कंगन बहुत महत्वपूर्ण थे।

संज्ञा की परिभाषा :

संज्ञा का शाब्दिक अर्थ होता है – नाम।किसी व्यक्ति ,गुण, प्राणी, व्जाति, स्थान , वस्तु, क्रिया और भाव आदि के नाम को संज्ञा कहते हैं

संज्ञा के भेद

1. जाति वाचक संज्ञा

2. भाववाचक संज्ञा

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा

4.समूहवाचक संज्ञा

5. द्रव्यवाचक संज्ञा

1. जातिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से एक ही जाति के अनेक प्राणियों , वस्तुओं का बोध हो उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं

उदहारण :- मोटरसाइकिल, कार, टीवी, पहाड़, तालाब, गॉव,लड़का, लडकी,घोडा, शेर।

2. भाववाचक संज्ञा :- जिस संज्ञा शब्द से किसी के गुण, दोष, दशा, स्वाभाव , भाव आदि का बोध हो वहाँ पर भाववाचक संज्ञा कहते हैं।

PUNA

उदहारण:- गर्मी, सर्दी, मिठास, खटास, हरियाली, सुख।–

3. व्यक्तिवाचक संज्ञा :- जिस शब्द से किसी एक विशेष व्यक्ति , वस्तु, या स्थान आदि का बोध हो उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहतेहैं।

उदहारण :- भारत, गोवा, दिल्ली, भारत, महात्मा गाँधी , कल्पना चावला , महेंद्रसिंह धोनी , रामायण ,गीता, रामचरित मानस आदि।

लेखन –विभाग

अपने क्षेत्र में बिजली संकट से उत्पन्न परेशानियों को दूर करने के लिए विद्युत विभाग को पत्र लिखिए–

सेवा में महाप्रबंधक,

दिल्ली विद्युत बोर्ड,

नई दिल्ली।

महोदय,

मैं आपका ध्यान मंगलपुरी क्षेत्र में व्याप्त बिजली संकट की ओर आकर्षित करना चाहता हूँ। इस क्षेत्र में बिना पूर्व सूचना के कई–कई घंटे तक बिजली गायब रहती है। इससे हम लोग बहुत परेशान हैं खास कर विदयार्थियों का विशेष परेशानी हो रही है। आजकल हमारी परीक्षाएँ चल रही हैं हम लोग ठीक से पढ़ाई नहीं कर पा रहे हैं। बिजली संकट के कारण पानी का संकट भो खड़ा हो गया है।

धन्यवाद सहित,

भवदीय

राकेश दवे

PUNA

दिनांक 24 अप्रैल

स्वाध्यायः दादी पर एक अनुच्छेद लिखिए।

गतिविधिः दादी तथा नानी का फोटो लगाइए।

पाठ-3 हिमालय की बेटियाँ लेखक : नागार्जुन

शब्दार्थ

1 विशाल- बड़ा

2 खिलखिलाकर- जोर-जोर से

3 कौतूहल- जिज्ञासा

4 घाटी-पर्वतोंके बीच की भूमि

5 आकर्षक- अपनी ओर खीचनें वाला

6 वास्तव- हकीकत

7 प्रेयसी-प्रेमिका

8 तबियत -सेहत

9 विराट- बड़ा

10 सिर धुनना- शोक के कारण बहुत दुखी होना

11 बालिका- छोटी लड़किया

12 झिझक- संकोच

13 संभ्रात- शिष्ट

14 अधित्यकाएँ- पहाड़ के ऊपर की समतल जमीन

15 नटी - नर्तकी

16 प्रतिपादन -लौटाना

17 मुदित -प्रसन्न

अतिलघु प्रश्न

1 लेखक ने हिमालय की बेटियाँ किन्हें कहा है?

उत्तरः लेखक ने हिमालय की बेटियाँ हिमालय से निकलने वाली नादियों को कहा है।

2 मैदानी भागों में नदियाँ कैसी दिखती है?

उत्तरः मैदानी भागों में नदियाँ बड़ी गंभीर ,शांत और अपने में खोई हुई लगती हैं।

3 हिमालय के जंगल में मुख्यतया कौन-कौन से वृक्ष पाए जाते हैं?

उत्तरः हिमालय के जंगलों में देवदार ,चीड़ सरो, चिनार,सफेदा, कैल आदि वृक्ष पाए जाते हैं।

4 सतलज के प्रगतिशील जल ने लेखक पर क्या असर डाला?

उत्तरःलेखक ने जब सतलज नदी के जल में अपने पैर लटकाए, तो उसकी थकान, उदासी तथा तबीयत का ढीलापन जाता रहा और वह प्रसन्न हो गया।

लघु प्रश्नः

1 लेखक नदियों के प्रति किस प्रकार के भाव रखता है?

उत्तरः लेखक अपने दिल में नदियों क प्रति आदर और श्रद्धा का भाव रखता है। ये नदियाँ उसे किसी संभ्रात महिला की तरह तरह उनकर्ा धाशांत और गंभीर लगती थीं। लेखक इनमें आत्मीय लगाव भी रखता था। वह माँ,,दादी,,मौसी और मामी की गोद की तरह उनकी धारा में डुबकी लगाकर प्रेमानुभूति करता था।

2नदियों को माँ मानने की परंपरा हमारे यहाँ काफ़ी पुरानी है। लेकिन लेखक नागार्जुन उन्हें और किन रूपों में देखते हैं ?

लेखक नदियों को माँ मानने की परपंरा से पहले इन नदियों को स्त्री के सभी रूपों में देखता है जिसमें वो उसे बेटी के समान प्रतीत होती है। इसलिए तो लेखक नदियों को हिमालय की बेटी कहता है। कभी वह इन्हें प्रेयसी की भांति प्रेममयी कहता है, जिस तरह से एक प्रेयसी अपने प्रियतम से मिलने के लिए आतुर है उसी तरह ये नदियाँ सागर से मिलने को आतुर होती हैं, तो कभी लेखक को उसमें ममता के स्वरूप में बहन के समान प्रतीत होती है जिसके सम्मान में वो हमेशा हाथ जोड़े शीश झुकाए खड़ा रहता है।

Question 2:

3 सिंधु और ब्रह्मपुत्र की क्या विशेषताएँ बताई गई हैं ?

इनकी विशेषताएँ इस प्रकार है:-

(i) सिंधु और ब्रह्मपुत्र ये दोनों ही महानदी हैं।

(ii) इन दोनों महानदियों में सारी नदियों का संगम होता है।

(iii) ये भौगोलिक व प्राकृतिक दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण नदियाँ हैं। ये डेल्टाफार्म करने के लिए, मत्सय पालन, चावल की फसल व जल स्रोत का उत्तम साधन है।

(iv) ये दोनों ही पौराणिक नदियों के रूप में विशेष पूज्यनीय व महत्वपूर्ण हैं।

दीर्घ प्रश्न

1 काका कालेलकर ने नदियों को लोकमाता क्यों कहा है ?

नदियों को लोकमाता कहने के पीछे काका कालेलकर का नदियों के प्रति सम्मान है। क्यों कि ये नदियाँ हमारा आरम्भिक काल से ही माँ की भांति भरण-
पोषण करती आ रही है। ये हमें पीने के लिए पानी देती है तो दूसरी तरफ इसके द्‌वारा लाई गई ऊपजाऊ मिट्टी खेती के लिए बहुत उपयोगी होती है। ये मछली पालन में भी बहुत उप योगी है अर्थात्
ये नदियाँ सदियों से हमारी जीविका का साधन रही है। हिन्दू धर्म में तो ये नदियाँ पौराणि क आधार पर भी विशेष पूजनीय है। हिन्दु धर्म में तो जीवन की अन्तिम यात्रा भी इन्हीं से मिलकर समाप्त हो जाती है। इसलिए ये हमारे लिए माता के समान है जो सबका कल्याण ही करती है।

2 हिमालय की यात्रा में लेखक ने किन-किन की प्रशंसा की है ?

लेखकनेहिमालययात्रामेंनिम्नलिखित कीप्रशंसाकीहै -

(i) हिमालयकीअनुपमछटांकी।

(ii) हिमालयसेनिकलेवालीनदियोंकीअठखेलियोंकी।

(iii) उसकीबरफ़सेढकीपहाड़ियोंकीसुदंरताकी।

(iv) पेड़-पौधोंसेभरीघाटियोंकी

(v) देवदार, चीड़, सरो, चिनार, सफैदा, कैलसेभरेजंगलोंकी।

3 हिमालय जाकर लेखक ने नदियोंके प्रति अपनी सोच मेंक्या-क्या अंतर पाया?

उः हिमालय पर जाने से पूर्व लेखक सोचता था कि नदियाँ किसी संभ्रांत ,प्रौढ महिला की तरह शांत एवं गंभीर रहती हैं।उनकी धारा में डुबकी लगाने से माँ, दादी, मौसी, नानी आदि की गोद की तरह सुखानुभूति होती है, पर उसने उन्हींनदियों को अत्यंत दुबले-पतले रूप में पाया, जो मैदानों में विशाल रूप धारण के लेती हैं। इस प्रकार उसने नदियों के प्रति अपनी सोच में अंतर पाया।

व्याकरण

संज्ञा

4. समूहवाचक संज्ञा क्या होती है :- इसे समुदाय वाचक संज्ञा भी कहा जाता है। जो संज्ञा शब्द किसी समूह या समुदाय का बोध कराते है उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण :- गेंहू का ढेर, लकड़ी का गट्ठर , विद्यार्थियों का समूह , भीड़ , सेना, खेल आदि

5. द्रव्यवाचक संज्ञा क्या होती है :- जो संज्ञा शब्द किसी द्रव्य पदार्थ या धातु का बोध कराते है उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं।

उदहारण :- गेंहू , तेल, पानी, सोना, चाँदी, दही , स्टील , घी, लकड़ी आदि।

नीचे लिखे वाक्यों में से संज्ञा शब्द बताइए-

Q.1) राधा कल दिल्ली जाएगी|

a) कल
b) राधा
c) दिल्ली
d) राधा, दिल्ली

Q.2) राम खेल रहा है|

a) राम
b) खेल
c) रहा है

Q.3) वह आगरा में रहता है|

a) वह
b) आगरा
c) रहताहै

Q.4) बुढ़ापा किसी को अच्छा नहीं लगता|

a) बुढ़ापा
b) किसी को
c) अच्छा नहीं लगता

Q.5) वह पुस्तक पढ़ती है|

a) वह
b) पुस्तक
c) पढ़ती है

Q.6) किसान हल चलाता है|

a) किसान
b) हल
c) हल, किसान

Q.7) लता मंगेशकर बहुत अच्छा गाती है|

a) लता मंगेशकर
b) बहुत अच्छा
c) गाती है

Q.8) वह कल लाल किला देखने गया|

a) वह
b) लालकिला
c) कल

Q.9) घोड़ा दौड़ रहा है|

a) घोड़ा

b) रहा है

c) दौड़

Q.10) कल मैं बनारस जाऊंगा|

a) मैं

b) कल

c) बनारस

निबंध

भारत में नदियों का महत्व

भारत में नदियों का महत्व:इतिहासकार भारत में नदियों की भूमिका पर बहुत महत्व देते हैं। नदियों के किनारे पर प्राचीन भारत की सभ्यताओं का विकास हुआ। हड़प्पा सभ्यता के रूप में जाना जाने वाला पहला पूर्व-ऐतिहासिक प्राचीन भारतीय सभ्यता सिंधु नदी द्वारा बनाई गई सिंधु घाटी पर विकसित हुई थी। भारत के कई शक्तिशाली नदियों हिमालय से उभरते हैं। खड़ी घाटियों के माध्यम से घूमते हुए, कई सहायक नदियों से आवाज़ इकट्ठा करते हुए, जैसा कि वे जाते हैं, सिंधु और गंगा या गंगा विपरीत दिशाओं में अपने रास्ते चलते हैं, जो अरब सागर में एक हो जाता है, दूसरे बंगाल की खाड़ी में। दोनों पंद्रह सौ मील लंबा हैं गंगा ब्रह्मपुत्र द्वारा उनके मुंह के पास जुड़ा हुआ है, जो उन सभी की सबसे लंबी नदी है। इन शक्तिशाली धाराओं की तुलना में दक्कन पठार की नदियों और दक्षिण भारत कम प्रभावशाली हैं।

भारतीय इतिहास में नदियों ने हमेशा महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है अपने बैंकों के साथ-साथ सबसे पहले बस्तियों को पहले बड़े शहरों में बड़ा हुआ। पंजाब में सिंधु और उसकी सहायक उपनिवेशों द्वारा प्रदत्त उपहार, गंगा नदी के पांच नदियों की जमीन और हजारों सालों से भारत-गंगा के मैदान के विकास की शुरुआत में भारत की भारी जनसंख्या ने उपजाऊ घाटियों की खेती की है । क्या यह कोई आश्चर्य नहीं है कि शुरुआती समय से भारत के जीवन को पवित्र माना गया? आज तक, हिंदू गंगा की 'गंगा गंगा' कहते हैं महत्वपूर्ण शहरों और राजधानियों जैसे हस्तिनापुर, प्रयाग, और पाटलीपुत्र नदियों के तट पर स्थित थे

नदियों के कई सामाजिक, वैज्ञानिक व् आर्थिक लाभ है । नदियों से जीवन के लिए अत्यन्त आवश्यक स्वच्छ जल प्राप्त होता है यही कारण है कि अधिकांश प्राचीन सभ्यताएं ,जनजातियाँ नदियों के समीप ही विकसित हुईं। उदाहरण के लिए सिंधु घाटी सभ्यता , सिंधु नदी के पास विकसित होने के प्रमाण मिले है । सम्पूर्ण विश्व के बहुत बड़े भाग मे , पीने का पानी और घरेलू उपयोग के लिए पानी , नदियो के द्वारा ही प्राप्त किया जाता है। आर्थिक दृष्टि से भी देखे तो नदियाँ बहुत उपयोगी होती है क्योंकि उद्योगो के लिए आवश्यक जल नदियों से सरलता से प्राप्त किया जा सकता है । कृषि के लिए , सिंचाई एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है, इसके लिए आवश्यक पानी नदियों द्वारा प्रदान किया जाता है । नदियाँ खेती के लिए लाभदायक उपजाऊ जलोढ़ मिट्टी का उत्तम स्त्रोत होती हैं। नदियां न केवल जल प्रदान करती है बल्कि घरेलू एवं उद्योगिक गंदे व अवशिष्ट पानी को अपने साथ बहकर ले भी जाती है। बड़ी नदियों का उपयोग जल परिवहन के रूप मे भी किया जा रहा है।

गतिविधिः हिमालय के चित्र लागाइए और हिमालय पर पाँच वाक्य लिखिए।

स्वाध्यायःहिमालय से निकलने वाली नदियों के नाम लीखिए चित्र चिपकाइए और किन्ही दो का वर्णन कीजिए।

PUNA